जिज्ञासावाद के दौरान

— दिनेश कुमार लाल

जिज्ञासावाद के दौरान
(कविता संग्रह)

कृतिस्वाम्य दिनेश कुमार लाल
प्रथम संस्करण १९९४
मूल्य ₹ २५ - ००

प्रकाशक गणमित्र
(साहित्य प्रकाशन संस्थान)
रानीगंज

मुद्रक
रामानुज मण्डल
अनुप्रिया प्रेस
थाना रोड अण्डाल
(पश्चिम बंगाल)

सविनय

" मेढकों की
अंतिम बार की टर्र - टर्राहट
के बचे - खुचे शब्द अंश
किसी घोड - पछाड के फूले पेट स सुने जा रहे है
यकीनन अब हमारे यहा
घोषित होने वाली है
खुफिया उपशान्ति की
समय सारणि "
(हमारे महादेश मे जो छाई है उपशान्ति)

लोकोन्मुख सहजता तथा मानवीय अनुराग की ऊष्मा से प्रतिबिम्बित कविताओ का यह सकलन " जिज्ञासावाद के दौरान " युवा रचनाकार दिनेश कुमार लाल का पहला काव्य सकलन है ।

सकलन की कविताए अपने आस - पास के भरे - पूरे जीवन की सहज सश्लिष्टता को तो व्यक्त करती ही है साथ ही साथ प्राकृतिक परिवेश की ओर भी उन्मुख है । कथ्य की सादगी, भाषा की लाक्षणिकता और बारीक सकेन से सम्पृक्त सकलन की कविताए अपने समय और सवेदना को तराशने मे औजार गढने का कार्य करती है । उम्मीद की जाती है कि सुधी जनो मे सकलन की कद्र की जायेगी ।

-- प्रकाशक

दो बात

अब जन जीवन मे अनुशासित ढग से सब कुछ तय हो जाना अपने आप मे एक मौजूदा षड्यन्त्र से कही कुछ कम नही दिखा रहा है। जीवन के सभी आयाम कही-न-कही से आयोजित या प्रायोजित होकर क्षण भगुरता हासिल करने मे महारत हासिल करने जा रहे है। ऐसे मे सभी नायाब मुहावरे चूसे हुए शब्दो का जखीरा मात्र बनते जा रहे है और कोई भी भावमूर्ति लोगो को समझाने, बहलाने या लुभाने मे अपनी अलौकिक डुग डुगी की रिदम को देर तक टिका नही पा रही है। ऐसे मे साहित्य खास कर मुद्रित साहित्य मे मृत्यु, पुनर्जन्म, अर्पण तर्पण जैसी साहित्यिक नशाखोरी की अतिवादिता खब गहरे स्तर पर प्रकट की जा रही है।

ऐसे ही क्षणो मे मुझे दीनो कम्पाना' बहुत याद आ रह ह कि
—'मेरे लिए तुम अपने बालो मे
लेकर आई थी
थोडे से समुद्री शैवाल और तुम्हारे
कास्य शरीर मे हवा का एक झोका था।"
पर नही भूल पा रहा हू चेजारे पावेजे का कि—
मृत्यु आयेगी और
छीन लेगी तुम्हारी आखें
मृत्यु रहती है हमारे सग
हमेशा जागती हुई
सुबह से शाम
बाहुरी। अतीत के पश्चात्ताप की
अर्थहीन व्यसन
तुम्हारी आखें।

मित्रो ऐसे ही दौर मे ' जिज्ञासावाद के दौरान ' काव्य सग्रह आपके हाथो मे है। इसमे मेरी हाल फिल्हाल सद्य सृजित कुछ कविताओ का समावेश है। मुझे विश्वास है कि आप भी इन्हे अपने ढग से अच्छा या खराब पायेंगे, क्योकि मौजूदा साहित्य मे तटस्थता एक अपशब्द के अतिरिक्त कुछ नही होता है।

अपनी रचनाओ को पुस्तक के रूप मे पाकर जिन अग्रजो व बधुओं का आभारी हू उनमे से अधिकतर नाम मेरे आने ही अति प्रिय शहर रानीगज व उसके आस पास के है। इनमे मे बहुत सारे नाम ऐसे भी है जो समकालीन कथा साहित्य मे मील के पत्थर ' तय किये जा चुके है। इनमे हटकर कुछ नाम ऐसे भी है जिनमे सयोग को अनिवार्य मे बदल देने की अदभुत विलक्षणता है क्या पता कल इनके साथ का भी कोई मिथ उजागर हो जाय। ठीक विदार की तरह वही वचन मे ओठो पर मधुमक्खियो के झुड के बैठ जाने जैसे किस्से का।

अग्रज कथाकार सजीव भैया, आलोचक कहानीकार एव व्यग्यकार गौतम दा और मेरे बहुत ही आत्मीय मित्र क्रमश मृत्युजय तिवारी सृजय विजय शकर विकुज, रवि शकर सिह, सुरेश अतर निमत नवन्दु मदन त्रिवदी शिवकुमार यादव आदि का ऋणी रहूगा क्योकि अग्रजो ने समय समय पर हौसला आफजाइ की है और मित्रो के साथ साहित्य मे इश्क करने का मौका मिला है। हमने साथ साथ शब्दो को तापा है। आवरण के रेखाकन के लिए भाई अनिल श्रीवास्तव (सम्पादक कथ्य रुप इलाहाबाद) एव आवरण मुद्रण के लिए मिश्रा आर्ट प्रेस (कलकत्ता) का ऋणी हू

और इसके साथ ही अनुप्रिया प्रेस अडाल द्वारा मुद्रण सहयोग देने का भी मै हार्दिक आभार स्वीकार करता हू। जिनकी सक्रियता के कारण ही पुस्तक यथा समय निकल रहा है।

१ ११ ६४ शिव कुमार आज

समर्पण

अपनी पीढ़ी को जो इस शताब्दी की सबसे अधिक प्रतिभावान होकर भी सबसे अधिक असफल है ।

कविता क्रम

जन / यूथ का सताप

अभिहित
कर्णधार/राष्टनायक/राजनायक
ज्ञानप्रवर/महामहिम/जातिनायक
राष्ट उद्धारक
धिक्कार ।
अदना सा आदमी मै
जब बदलनी चाही
अपनी जि दगी/अपनी बेचारगी

तुम्हारे रचे / रचाये

ग्रन्थो/उपदेशो से

उसने इतना पढा

वह इतना जगा वह इतना थका

कि सो गया बाकी सारी उम्र को ।

वह छोटा सा आदमी यू था, है

तुम्हारी अब तक की समूची

सफेदपोशी बाजीगरी पर ।

उसकी ठि है

तुम्हारी आने वाली साजिशो

स्वपोशी अनुमानी योजनाओ पर ।

यू भी कबतक बहलाओगे तुम

अपने तिलस्मी शब्दो से

मायावी काहिल रामायण रचकर

रचाकर

एक आदमी, हर आदमी

एक उम्र/हर उम्र

एक पीढी/हर पीढी

(भविष्य अनन्त) को ।

प्रश्न क्यों ?

म अनगिनत अशेष
अभेद प्राचीर
या सिफ पत्थर कोना
रिसता आया भर उम्र सदा ।
हर पल जकडा - तडपा
असह्य बोझ से
हुआ हूं म अपने ही स्वराज्य का
खूबसूरत शिकार
पुकारा है मने

हर आरम्भ
हर क्षण को
पाया है व्यथ
निस्तेज, निर्जीव, निर्विकार ।
उफ । ढक लेता हूं सारे शरीर को
अपने ही तीव्र क्रूर अट्टहास से ।
क्यो मै लाया गया ?
क्यो मै बसाया गया ?
क्यो ? क्या ? क्यो ?
आखिर जब मुझे
अवशेष ही बनना था
एक पागल अभिशाप का
तब क्यो ?
हवा मे बाधा गया मै बार-बार
किसी जायज हक के समान ?
कि दोष मेरा सिर्फ इतना
मै नहीं हूं
मै नही था
तुम्हारे कन्धों पर
कभी विनीत श्रद्धावान ।

असहमति होती है ऐसी

असहमति क बावजूद
मागते हो अब तुम
मेरा हाथ
वह मै पजीकृत करा दूगा
कभी तुम्हारे नाम
लेकिन क्या भरोसा
मेरी ये अगुलियां
आदत वश नहीं टटोलेंगी
तुम्हारे टेटुए को ।
वैसे ये मशहूर अगुलियां

तुम्हें तुम्हारी हिस्सेदारी पर
नीलामी की एवज मे
दिला सकती हैं
कोई कीमती अवार्ड ।
लेकिन ये
स्वभाव विरोधी हाथ/इसमे फसी
अंगुलियां
जिसे वक्त के
स्याह रंग मे रंगकर
जब मैं पंजीकृत
करा दूंगा तुम्हारे नाम
सभी तारीखें और गवाहियां
मूक होकर बन जाएगी
तटस्थ
और तुम्हे भी आने
लगेगा मजा
अपनी मौत से

एक साथ, साथ-साथ

आकाश जो जेहन में
है मेरे सम्पूर्ण निष्पाप
वह है विस्तृत और
सागर-सा नील
पर नहीं है वैसा पवित्र
जैसा एक दुधमुँहे बच्चे
की किलकारी ।
आकाश जो जेहन मे

है मेरा
जब तुम से दूर
नहीं फैल पाता है
तब सिकुड़ता जाता है
मेरा मैं मेरा अपनापन या
मेरा अस्तित्व
तब मेरा यत्न
मुझे किसी विख्यात कंपनी का
अनमोल मॉडल-सा लगता है
तब मुझे नहीं भाते हैं
लाल पलाश
हरी लताएं
सफेद निर्झर या
कोई रेशमी
भेंट में दी हुई रुमाल ।

सूर्य-पथ

सूर्य

महान गैलिलियो का कर्त्तव्य पथ

या

ज्ञान पिता आर्य भट्ट का उद्देश्य सत्य ।

युगों से बोता आया है निर्बीज

जिस्मों में

बिम्ब जीवन ।

प्रकाश कत या तारा जैसा
उसका अद्भुत
लेकिन
यह भी वहीं उगता है
जहाँ उनकी हवेली है
यह भी वहीं डूबता है
जहाँ हमारी खोली है
मैं इस सब कुछ मान सकता
पर
यह नहीं मान सकता
कि यह उस बेचारे की
नियति है ।

जिन्हे नही भूल पाता

वह क्षण
घुग्घर मे विसर्जित
दी जाने वाली आवाज
अस्थियो का
बुलफेलस की आखो
रिसते
आसुओ का ।
मुझ से कुछ दूर हटकर
एक जुल्मी शहशाह का

दहशत मोया हुआ है कब्र मे
कि उसके सामने
कि उसकी कब्र के
सामने तक
पान चबाने की जुर्रत
नहीं होती थी बर्षों
आज वह पस्त है
निरस्त है अलस्त है ।
कब्र चाहे असमर वाद की हो
या जन्हुर वाद की
उसमे तो मुर्दे ही लिटाए
जाते हैं न ।
वह क्षण
इन सब गड़े मुर्दों को
पछाड़ कर
आज की परिस्थितियों से
लोहा खाता हुआ
पार्थिव दिवगत सा ढकता हुआ
चिनार का दरख्त सा
गेष-ग्रीम को तनना हुआ
पुश्ता-बुजियो कुर्सियो स
चौतरफा बधता हुआ
एक छोटा सा मजबूत मकान
जहा मा बाप मित्र
देश और कुटुम्ब बसते ह

वहीं धर्म और श्रम बसते हैं
वह क्षण जब लगता है
इतनी छोटी-सी बात
समझाने में नाकाम हमारे तंत्र
शेष जनता को।
पीटे जा रहे हैं रंगीन रंगीन
ढोल
ईंट और पीट को
शैतानी कुरीति
इतना बड़ा घाल मेल
कि इस बीच ढेर सारे मध्यस्थ
सारे - के - सारे
लुंज - पुंज मौसमी - सतरंगी
अब क्या जरूरत रह गई इसकी
जब सारे जहां से अच्छा
वही
पागल सरपंच
अडियल सामंत
ड्यक अर्ल बैरन नाइट
के बीच
सफ एवं दलील गंध सा।
स्वाधीनता अच्छी बात है
पर इससे भी अच्छी बात है
स्वाधीन समझना
शायद इसी बात को

दुहरा कर
रोया था वह घोड़ा (सिकन्दर का बुल)
शाही अस्तबल मे रातभर
उसे विश्व विजेता समझकर,
लेकिन वह जो अश्व
गोली खाकर अर्पित हो गयी
घुग्घर मे
उसे गाली दूं या करु नमन
समझकर भी कुछ समझ मे नहीं
आता है बार बार
काश। उसे बुरा-भला कह ही
लेता एक बार तो मान लेता
उसे बार बार।

घुग्घर — एक नदी
बुल्फेलस — सिकन्दर के घोड़ा का
नाम

असम्बन्ध

दिल और दिमाग के दिवालिये पन से
बरगद को जड़हीन
करके
छत पर गमले में
उगाने का कुत्सित निश्चय
जैसे किसी फूल से
छीन लेना
खिलने मुरझाने का नैसर्गिक हक

ऐसी ही सनक की
शिकार हुई थी
कभी कोई छोटी मछली
वह तड़पी
वह मरी
काचघर
की साजिशो
मे
और आज देखो
सारे समुद्र का रग
गया है कितना बदल ।

वह सिर्फ याद भर नहीं है

उसकी
अनामिका की अंगूठी का
माधुर्य स्पर्श-दान
संयोग से करके
भारी विरोध भी
मेरी दाहिनी बांह को चूम जाता है
तब ऐसा लगता है

लाल लाल पोशाक वाली वह लडकी
सच की रेलगाडी पर चढकर
अपने नये घर बसाने को
मुझसे दूर जाती हुई
मुझसे ही कहती है
सिगरेट मत पीना अब ।
वक्त की तलहटी मे
अब सब कुछ
अपनी ही तडप से मैला होकर
ठहर जाता है तब वह लडकी
अपने बच्चो को अपने
पति के पास छोड
यादो के रूप मे मेरे पास
आती है और
मेरे बालो मे बिना मुझसे पूछे
अपनी मेहदी रची अगुलियाँ छुआकर
नूर मुहम्मद नूर की गजलें सुनाती है
बहुत देर बाद भी
जब वह लडकी जाने का नहीं
लेती है नाम
तब मै उसे उसके, बेटे के नाम
और पति के पद से
डराता हूँ।
अब तो और भी नहीं हिलती है
वह लडकी, उसकी याद

उसके सूजे गालों की
चुभने वाली जिद ।
ऐसे समय पर
जब लोगों की आखें
बन गई है पैरोकार
तब अपने घर से दूर
बनकर निष्पाप
अपने चाहने वालों के यहाँ
बिना भय सकोच क्यों चक्कर
लगाती है वह लडकी
उसकी याद ।
क्या वह जागलिका है जो
करती जाती है एक महान यत्न
दुनिया को विषमुक्त रखने का ।

जागलिका — एक जगली देवी

जिज्ञासावाद के दौरान

(क)

जिज्ञासावाद के दौरान
ढेर सारे रथ
लगे हुए है — द्वार
कि अभी किरणें उतरी नहीं मुडेर
धुंध और गोल धुंध मे
अंधेरा का अंधेर
जान बूझ कर
लगता है तय किया गया है

यह समय जिज्ञासावाद का
रथ पालो का ये रथ
है जीण शीर्ण प्राचीन
फिर भी नहीं है
उजड़ने को तैयार
इनकी महंगी-महंगी बात
ढेर सारे नारे
रग विरगी पताकाए
देती ह दगाए
जिज्ञासावाद क दौरान।
इनकी नियोजित प्रायोजित पूजी
कारगर वर्षों स
खरीद कर बेचने को
बेचकर खरीदने मे
पण सिद्धहस्त
खोखला जीवन दर्शन
बाया भाग इनका
ओपियम सा ही लगता है मुझको
दाया भाग तो और ही
खतरनाक टीटीयम ही टीटीयम
खा जाता है सबको।
ढेर सारे रथ
उन पर सजे सवार
वोट नोट और कोट
क लिए

बना लिए हैं प्रयोग स्थल
शेष लोगों का शेष जीवन
जब देश की आबादी
३० ३३ करोड़ की होगी
तब ये सवार
छेड़े थे एक अभियान
सबके लिए होगा ही
राग अलाप मल्हार बसंत
अहीर भैरवी तान
सुन्दर स्वर्णिम अवसर भरपूर
बनाव श्रृंगार अतुलित आनन्द
सन्तुलित देह सौष्ठव
शुद्ध खाद्य
हवादार - आवास
मौसमी - वस्त्र
लेकिन देखो तो आज
निरोग-निषेध के बीच
हर शहर
गली गाँव
कुनड़ों से भरा ठसाठस
एक बहुचर्चित
वैज्ञानिक समाधान
का अर्थ
बहुत सारे गाँवों मे
इतना ही पाया है मैंने

कि टेलिविजन के दृश्य को देखकर
गुब्बारे को लालायित बच्चे
बनिया के द्वारा ग्रामीण स्वास्थ्य केन्द्र से
उड़ाये गये निरोधक
लेमनचूस के पैसे से खरीद कर
फुला - फुला कर
फूले न समाते हैं
ताहम अब भी करोगे तुम
क्या इनका ?
शुष्क विरोध ?
उष्ण समर्थन
इस जिज्ञासाबाद के दौरान।

(ख)

ढेर सारे रथ
ढेर सारे सवार
रथ वालो की चालो पर
अच्छी खासी सफेदी
फिर भी चिकने चुपडे गाल —
लोक हित मे सारे-के सारे नाकाम
गावो की बात तो है
दूर दराज,
आज शहर का हर स्ट्रीट
फटा और गीला है
बहुत दिनो से जिद
मेरे बेटे की
कहता है वह
वह साइकिल पर
बैठकर
शहर को देखेगा
एक दिन समय पाकर
लाता हूँ मै उसे पास
कहता हूँ छुट्टी मिली है आज
चलो शहर घूम कर आते है
लेकिन बेटा कहता है
नही पापा नहीं अभी नही
तुम पागल हो गए हो क्या ?
जानते नहीं हो

ममय अभी खूनी मपेरा है
अभी सडक पर कर्फ्यू को
आन दो
फिर उसे जाने दो
तब तक खिलौने वाले पैसे को
जमा करके खरीद लूगा मैं
कोई बन्दूक
अपने स्कूल वाले कलर बावस
से
मिलाकर कई रग
तैयार कर लूगा
कोई रगीन झडा
जिज्ञासावाद के दौरान ।

निजी कारखाना

सख्त ईंटो का बना
विशाल कारखाना
आटोमटिक आक्टोपस
जब क्रियाशील होता है
तब मुक्त हाथो स बाटा करता है
फिजा को
धूल गैस और धुआँ।
यह निगलता है वह उगलता है

ढेर मारे लोगों को एक साथ
कमाल यह भी कि
कुछ लोग उसके निगलने पर
बहुत लोग उसके उगलने पर
बेहिसाब मोटे और दुबले
बनते जाते हैं।
कुछ लोग कहते हैं कि
उसकी जीभ ब्रह्मा की है
कुछ लोग कहते हैं कि
उसका मन इन्द्र का है
लेकिन निहत्थे श्रमिक जानते हैं कि
चाहे उसकी जीभ ब्रह्मा की हो या
मन इन्द्र का
वह हमेशा उनका ही खून पीता है।
वैसे प्रिय आक्टोपस को
काफी दिन गवाकर
किसी ने सिखाया है
निगलने और उगलने की कला
और जरूरत के मुताबिक
फैलाई गई है यह बात
कि उसके उगलने और निगलने में
ढेर सारों की भलाई है।
कुछ लोग सच ही कहा करते हैं कि
आज यह आक्टोपस बहुत बलवान
जैसा कभी गुलाबी नाम की

घुतिया हुआ करती थी।
कभी २ यह आक्टोपस
अपने उगलने निगलने के
क्रम मे
अपने शिकार की
गरदन दबाने के बजाय
हाथ काट कर रख लेता है
लेकिन कभी कभी करता है
उपकार
जब मन मे ठाता है ठान
करने को अपना विस्तार
उस समय यह आक्टोपस गिरगिट
सा अपना रग बदलता है
और हो जाता खब विनम्र
मिलता है लोगो म
दिल खोलकर
उस समय होता है
इतना
महान
कि कोई मजदूर बच्चा भी
कर दे उस पर मूत
तो वह बुरा नहीं माने
और उस समय उसकी
महानता को भुनाने
उसम मिलकर

फोटो खिचवाने के क्रम मे
होते हं —
पार्टी नेता
यूनियन लीडर
राजपत्रित अधिकारी
और इन सबो से
करके सहवास
आक्टोपस कई नये
आक्टोपसो को नये-नये
लाभ जन्तु उत्पादो के
लिए जन्म देता है।

डूबना किसी प्रसंग का

क्षण भंगुरता
और
महानश्वरता
के खिलाफ
कायम तुलसी
थी अपनी ऊँचाई पर
हम थे
दो तन
एक मन

गहन मिलन खोल से भी हट कर
स्नायु शक्ति
भी हमारी
थी काफी बढी चढी
तने थे हम
प्रेम को
बनाए थे हम उस
अप्रतिम हथियार
सजा - सँवरा दिया था वह
हमे
शात सहारक दुधर्ष अस्त्रागार
हमारी कल्पना भी थी
इतनी सशक्त
कि
मिलकर
दो जोडी आख
रीति-रिवाजो की दकियानूसी दभ को
दे देंगे वीतराग सयास
शपथ और वादा गान भी
झूम झूम सा साथी था
अपना हमारा
हमसा ही कुआरा
टूटना अलगाव का
लगभग तय था

किसी अनुबध सा
अब हम
मन ही मन
सजे थे
जीत के ढेर सारे
रगीन एक्सपोजो मे
सारी दूरिया दूरत्व की
मिमटती जा रही थी दूर
पलने लगी थी अब कही
रिश्ते-नाता की बू
चमकने लगी थी कही
आखो की पारा दार चमक
वक्त लगने लगा था गढने का
रचनात्मक कार्यक्रम
तभी कही दूर से चल कर
ऐय्यारी वासना का
महातिमिर छाया
जिसमे हम डाल चुके सारे
स्वप्निल धवल घोडे अतीत के
देखने ही देखने
आत्मा की कर्पूरी भाषा
अपनी सारी पहचान के बावजूद
उतर गयी प्यास
किसी गहरे गह्वर
अब हम बनकर

बोतल बद सफेदी की झागदार छाप
भभक पड़े
जिन्दगी-मोड पर भटक कर
'निश्छल प्रेम'
जिसे हम कभी माना करते थे
दुनिया की सबसे पवित्र उडान
लगने लगा
समर्थ लोगों का मन रगने की
दुर्निवार मशीन
या
धोती खोल पद्धति का जबरदस्त
पक्षधर
जो समयगध को पाकर अनुकूल
तन शोध को ही
प्रिय विषय मान आकठ उसमे ही
अपने प्रसग के साथ
कहीं का कहीं जा डूबा ।

मैं हतप्रभ मन

मै हतप्रभ मन, अपनी
चौकन्नी इच्छाओं को
अपने पहाडी कंधे पर
साधकर
दूर कहीं दूर से भी दूर
शरणार्थी बाप सा
लेकर बेचैन मन
भटका करता ।

मैं हतप्रभ मन
बनावटी पड़ाव से होकर अपरिचित
कथित आराम स्थलों को करके
उपेक्षित
अपने असुसज्जित
लम्बी यश राशि को
अपने चौड़ वक्षस्थल पर
चुभाता जाता।

मैं हतप्रभ मन
किसी श्रेष्ठ जत्थे का
अदना सा देहपुंज
अपनी अतीती श्रेष्ठतम बूंदों को
खोता जाता
जिससे धीरे-धीरे धीमा पड़ता जाता
मेरा मानसिक, नैतिक, भौतिक कसाव
ताकि होकर मैं अपने ध्रुव ध्यान
से विलग
खोज सकूं अपने में कारण
बदनाम खून पंजाबियत का
या
बिहारी तुच्छ बदनामियत का।

अभियोग मेरे ऊपर भी आयेगा

मुझे लग रहा है
आ रहा है वह समय
जब चलेगा
महाभियोग
हम पर
हमारे जमाने पर
तब शक की सूई
घूमेगी चारो ओर

बचेगा उससे न कोई
शख्स
न कोई शख्सियत
जमा तलाशी के बाद
हममे से पाया जायेगा
शायद ही कोई निर्दोष
आने वाला गर्भस्थ शिशु
हम पर
डालेगा कई दोष
तब टूटेंगी कई भाव - मूर्तियां
अहम्मन्यताओं की पक्तियां
आज छाए हुए हैं युग पर
बनकर जो जन उद्घोषक
अपनी पूछ को छिपाते फिरेंगे
यत्र तत्र
अनगिनत मशालों के मध्य में
होंगे
ऐसे ही कई प्रश्न
कि पाकर भी
जुबान तुम चुप क्यों थे ?
जब
सुधारों के पिछले पहर में
घर बाहर
टांगे जा रहे थे
दागदार

प्रेमियर
लोगो के जन जीवन मे
डाला जा रहा था
जब गाढा घोल बोल
ओढकर आदर्शों की चुदरियाँ
बैठे क्यो थे किसी आशा मे तिकोने मे
पैदा करके नफरत और दूरी
जब खेली जा रही थी
नौ छौ की बाजी
तब भी थे तुम चुप
औरो की तरह क्यो ?

नहाकर छत पर आयेगी वह लडकी

कल सुबह
नहाकर
छत पर आयेगी
वह लडकी
बालो की काली भीगी
लटें बिखराए
जब वह दूर पूरब के
सूरज को

नजदीकी भवर देगी
घूमने के क्रम मे
उसकी नजरें
मुझ पर पड़ेंगी
तब वह कुछ और झुकेगी
छत वाली वह लडकी
माग सकती है
अपने इष्ट देव से
पिता के लिए काय व्यापार मे
रिद्धि सिद्धि
भाइ के लिए सफलता निधि
मा का अक्षुण सुहाग
बहन का अनत अपनापा
या
मेरे द्वारा उसे हसी
खुशी देखने का यह प्रिय सिलसिला।

फूल मुरझाते नहीं

फूल
एक ताजा अहसास
बेचैन हाथों
घुत स मन को
देते ह
नरम मिट्टी सी
सुगन्ध सृजन।
फूल
मुरझाते नहीं मिलन के
एक दो दिन या युग के क्षीण
फासले पर
बदलती अंगुलियों की
परिभाषा से
फूल
खोते नहीं है ताजा पन
वे
बहकते नहीं है
कभी
लाल या काली मिट्टियों की
सौम्य या स्थूल बनावट पर
फूल
इसलिए मुरझाते नहीं।

जिक्र आने से याद आता है

जब जब मेरे पैदा होने का जिक्र
आता है
तब तब मुझे अपनी मा का ख्याल
आता है
तब
मुझे अपनी मा के झुर्रीदार गालो पर
हरान की पतली सकरी
घाटिया

फलते फूलते नजर आती हैं
कहते हैं
मेरा जन्म
मेरी मा की शादी के लम्बे
अंतराल पर हुआ है,
उस समय तक यानि
मेरे पैदा होने तक
मेरी मां
हरान के रबान की
बेटी रेचेल का मर्मस्पर्शी
किस्सा (दोदापन फल खोज कर
खाकर गर्भ धारण करने का)
नही जानती थी
मेरी मा
अब भी उन किस्सो को सुनना
शायद न चाहगी
पर जिक्र आने से संतान का
जब मं उसे दोदापन की
बात सुनाऊंगा
तब मुझे विश्वास है
मेरी मां अपनी यादों पर
जवानी के दिनो की कंघी
फेरेगी
तब मुझे उसके सीने मे
नीम की छाह वाले

ठंडे कुए का पानी दिखेगा
जिसका जिक्र करूंगा
मैं
कभी
अपने दोस्तो मे
अपने बच्चा म
खासकर उनमे
जिनमे
मा या बाप
बनने के लिए
दोदापन की सख्त
तालाश ह।

भारतीय साभर
साइबेरियन सारस
निब्बतियन याक
बाग्लादेशी गोद
यही सुफिया उपजाति
अपने ब्राह्ममुहूर्त की वेला मे
निगल चुकी है
अक्षत सा लगने वाला
मध्य पूर्व एशिया की गम हरियाली ।
यही उपजाति न जाने कब से
बिछी हुई काबुल की गलियो मे
बनकर हत्यारी बिजली की ईट
इसने ही बनाने को बना रखा है
दिल्ली को नया दलाल
बीजिंग मे इसने ही दिए हुए
डालर को खरीदारी का द्वैध अधिकार
इसके ही कारण
करा ची मे
गदे शेरवानी मे ही
दफनने को
विवश है
बिहारी मुसलमान
तो क्या इस उपजाति के
गहरे - पेट - प्रकरण मे
कई टेथिस समाने बाकी हैं ?

प्रणय निवेदित जोड़े
झड़ जायेंगे
हरे संयुक्त पत्ते
अगर
पक्षी उड़े
उड़ने दो / पत्ते झड़े
झड़ने दो
संसार के सारे पेड़
इसी बरगद की तरह
थोड़े ही होंगे सहमे
जो वर्षों से अपना कर
या कहिए
अपने खून या वीर्य से
रचकर
अपनी संतान/प्रिय
को
सिर्फ
उड़ते या झड़ते देखते हैं।

म चाहता हू
सभी युवाओ के जीवन मे
थोडा थोडा हो
जवानी क दिना की कभी
न भूलने वाली
फागुन की पुरवाई मे
निर्मल निर्भर जल वृन्दो की
नाव पर बिताई गई
अनोखी रात की बारात की
बात ।
मैं चाहता हू
सभी वृद्धो के हिस्स मे पडे
सीपि भर
ताजे खून का जुगाड
जिसस कि
बुढ़ाप मे घनघोर
चिपचिपाहट वाले दिनो को
जोड सके
आने वाली पीढ़ी स
मजबूती के साथ ।

तय किया है जिसने
कई सफर मुकाम
जगलो मे
खेतो मे
गलियारो मे
आज बहुत शिद्दत से
करती है महसस
कि
यह ममाहत और बहुश्रुत
उसको दिखना
नकली दातो के चौखटे सा
हो गया है मुह मे बद
जिससे वह मात्र लील सकती है
आराम और हराम
या
हिन्वा ब द हल्वा।
और
अब बहुत हो गई है बेबस
अब वह ताड नही पा रही है
एक पोथे पन का
गिनेगो से भरा हुआ हुआ
पुत्र गी / बिम मी
सा
कोई मन्या अवधे।

गुलमोहर कभी नही मरता

वर्षों पहले
जब मैं छोटा हुआ करता था
अपने घर के पास
एक सुन्दर सा पेड़
देखा करता था
वह पेड़
मेरी खुशियों का साक्षी
मेरे जन्म होने पर

मुझ तक दौड़ा दौड़ा
भागा आता
शायद उसे मेरे सुखों से अधिक
दुखों की खबर होती थी
मेरी उदासी के क्षण
वह पेड़
मेरे लिए
अपने आस पास से
खास खास
लाल पीले फूल
और हरी - हरी पत्तियां लाता
और मुझे खुशी खुशी सा
देखकर
वह
खुशी-खुशी चला जाता
समय इसी तरह गुजरता गया
मैं अब पहले सा छोटा न रहा
बड़े - छोटे का
भेद आने लगा समझ
अब वह
पेड़, पेड़ से गुलमोहर बना
एक दिन बहुत कुछ
तय करके
मैंने सोचा
जाऊंगा गुलमोहर के पास

और उस उसका नाम
जाऊं गा गुलमोहर के पास
गुलमोहर बनाऊं गा
आश्चर्य । उस दिन
मेरे लाख बोलने पर भी
वह गुलमोहर
मुझ से कुछ न बोला
हम दोनों जीवन में
पहली बार
आमने - सामने
खड़े होकर थे निर्वाक
निःसंवाद
इस तरह से
गुलमोहर से मैं लगातार
दूर होता चला गया ।
अब वह पेड़ मेरे लिए
मेरे पास आना छोड़ दिया
मैं भी उसके यहां उसका होकर
जाना छोड़ दिया
पर मेरी आंखों में
वह पेड़
वह गुलमोहर
अब भी बसा करता था
इस बीच
एक दिन

लगने वाली थी
कहीं पेडो की
मौलिक
चित्र - प्रदर्शनी
गुलमोहर का चुप चाप खडा रहना
सताता था मुझे बार - बार
सोचा, करके खूब बडी मेहनत
कला की दुनिया पे
कर दूगा उसे सचल
इसलिए काफी दिन थककर
मैने बनाया एक चित्र
चित्र था गुलमोहर का
उस पेड का
अनायास दूर से
देखने से लगता था वह
किसी सुन्दर
देवदूत सा खूबसूरत चेहरा
चित्र मे बिखरे थे
मैने वही सुदर फूल
वही सुन्दर पत्तिया
जिन्हे वह पेड
मुझे नित्य दिया करता था ।
उस दिन
हुई थी मुझे पर
बहुत वाह-वाह

कुछ लोग मुझे
एक और
मक्बूल समझे
युद्ध के लिए मैं
आने वाले दिनों का
था वॉन गाग
जब मुझे मिला इनाम
मैंने देखा अपनी आंखों से
लोग खरीद रहे थे
अपने अपने - घरों मे
लगाने को
ढेर ढेरे छोटे गुलमोहर
अब मैं बहुत खुश था
कि गुलमोहर
मुझ पर बहुत खुश होगा
वह मुझे
बहुत सा धन्यवाद देगा
लेकिन अवाक !
गुलमोहर के पास पहुच कर देखा
वह खडा था लुटा लुटा सा
लूटने वालों मे
मुझे
दिखे कई चेहरे
जिन्होंने
बांटे थे, इनाम

फूल और पत्तियों के बिना।
उसकी सारी गाठे
दिख रही थी साफ साफ
उस दिन
म
उससे बातें करना तो दूर
आज तक न मिल पाया
तब सोचा खडा होकर निश्चल
जब म कुछ और बन जाऊ बडा
तब इसके बारे मे नये सिरे से सोचू गा !
अब स कुछ दिन पहले
न जाने क्यो
उस पेड उस गुलमोहर
की याद मुझे बार बार आने लगी
शायद मुझे कुछ दिनो के लिए
जाना था कही दूर
सोचा ऐसे तो मेरे बिना
होकर असुरक्षित
मेरा पेड / मेरा गुलमोहर
वे — मौत मारा जायेगा
बहुत सारे कामो को छोडकर
मै दौडा गुलमोहर के पास
दिखा वह पहले सा ही निस्पद
उसकी असुरक्षा के भाव स
म हो गया विकल

मेरे दिगभ्रमित मन मे
समझ मे आई यह बात
कि फूल चुराते होगे बच्चे
पत्ती चबाती होगी गिलहरिया
मेरे लिए था यह सरासर अन्याय
अब मुझ मे भी था खूब दम-खम
मेरे नाम से भी थे अब
ढेर सारे पैड/ढेर सारे कन्टाक्ट
तत्काल उठाकर कदम
गुलमोहर को
ईट व सीमेट से बधवा दिया
काटें व तार से घिरवा दिया
फिर एक तख्ती लिख कर उस पर
चिपका दिया
कि —
गुलमोहर मेरा ह
मेरे सिवाय उसे कोई न छुवे
कोई न देखे
खासकर दी हिदायत
मने अपने आदमियो को
कि बच्चे और गिलहरी से
इसे खूब बचाना है
अब म खुश था और था आश्वस्त
कि मने गुलमोहर पर करके
बहुत सारे खर्च

चुका दिया था उसका कर्ज
लेकिन
अब से कुछ देर पहले
मन में गुलमोहर को
देखा अन्तिम बार
वह फूल पत्ता शाख – हीन
पेड़
मेरे ढेर सारे खर्च और
सुरक्षा के बावजूद
छोड़े जा रहा था अपनी जमीन
मुझे पाकर पास
तेज से तेजतर चलने
लगी थी उसकी सांस
कब मैं उसे देखते ही समझ गया
कि वह छोड़ने वाला है अपनी जगह
धरती से जकड़ी उसकी जड़े
छोड़ चली थी धरती को
शायद उसका था यह प्रण
कि मेरी बाहों मे ही वह
अन्तिम बार जिएगा
अचानक मेरे छूने पर
चमकने लगी थी
उसकी आंखें
यह बोलने वाला था
ढेर सारे भाव

प्रेम अमर होता है
गुलमोहर प्यार का प्रत
अमर होता है
पर
मैं
ऐसा नहीं कर सकता
मैं ऐसा नहीं करूँगा
क्यों कि अमर रहने वालों
को
किसी के समर्थन की भूख
नहीं होती है
लेकिन नीच समर्थक
अमर रहने वालों को
एक ही वार में मार देता है
बार-बार
मुझे डर है
मेरे चीखने या चिल्लाने पर
मेरे बचपन का पेड़
मेरी जवानी का गुलमोहर
कहीं मेरे ही कारण
मेरे ही सामने
सचमुच मर न जाए ।